SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 4

औद्योगीकरण का युग

भाग - 6

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



लघु उद्योगों की बहुतायत

- प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारत में फैक्ट्री-उद्योगों में लगातार इजाफा हुआ।
- यद्यपि अर्थव्यवस्था की दृष्टि से विशाल उद्योगों का हिस्सा बहुत कम था।
- ये विशाल उद्योग अधिकांशतः बंगाल और बम्बई में ही स्थित थे यानि - 1911 में 67 प्रतिशत इन दो स्थानों पर ही थे।
- बाकी पूरे देश में छोटे स्तर के उत्पादन का ही दबदबा था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- पंजीकृत फैक्ट्रियों में मजदूरों का बहुत छोटा हिस्सा ही काम करता था।
  यह संख्या 1911 में 5 प्रतिशत और 1931 में 10 प्रतिशत ही थी।
- बाकी मजदूर गली-मोहल्लों में स्थित छोटी-छोटी वर्कशॉप और घरेलू इकाइयों में काम करते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

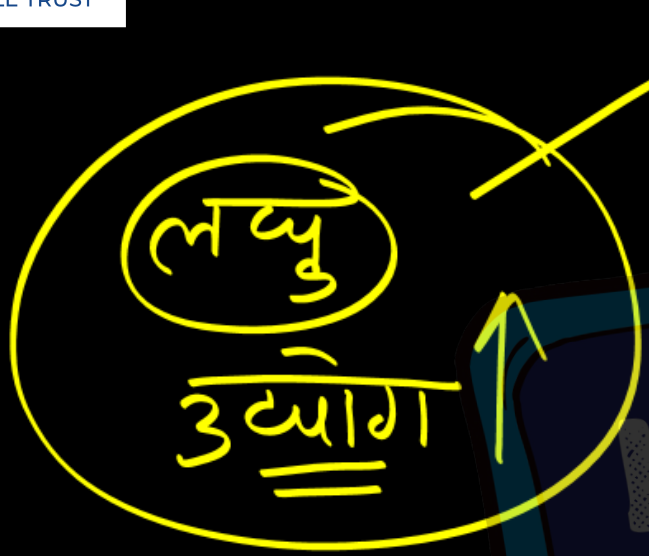

हथकरघा उद्योग का विकास

- कुछ मामलों में तो 20वीं सदी के दौरान हाथ से होने वाले उत्पादन में इजाफा हुआ था।
- यह बात हथकरघा क्षेत्र के बारे में भी सही है।
- यद्यपि मशीन निर्मित सस्ते धागे ने 19वीं शताब्दी में कताई उद्योग को तो खत्म कर दिया था लेकिन फिर भी तमाम समस्याओं के बावजूद बुनकर अपना व्यवसाय चलाते रहे।
- फिर 20वीं सदी में हथकरघों से बने कपड़े के उत्पादन में लगातार सुधार हुआ।
- 1900 से 1940 के बीच यह तीन गुना हो चुका था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

① 1900-1940
② हाथ

Q हथकरघा उद्योग का विकास का कारण?

- इसके पीछे आंशिक रूप से तकनीकी बदलावों का हाथ था।
- अगर लागत ज्यादा न लगे और उत्पादन बढ़ सकता हो तो हाथ से काम करने वालों को नयी तकनीक अपनाने में कोई परेशानी नहीं होती है।
- इसलिए 20वीं सदी के दूसरे दशक तक आते आते बुनकर फ्लाई शटल वाले करघों का इस्तेमाल करने लगे थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



फ्लाई शटल :- यह रस्सियों और पुल्लियों से चलने वाली मशीन है जिसका बुनाई के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

यह क्षैतिज धागों (ताना) को लम्बवत् धागे (बाना) में पिरो देती है।

फ्लाई शटल से चौड़े अरज का कपड़ा बनाने में मदद मिली।

इससे बड़े हथकरघे चलाये जा सकते थे।

- इससे कामगारों का उत्पादन बढ़ा तथा श्रम की माँग में कमी आई।
- 1941 तक भारत में 35 प्रतिशत से ज्यादा हथकरघों में फ्लाई शटल लगे होते थे।
- त्रावणकोर, मद्रास, मैसूर, कोचीन, बंगाल आदि क्षेत्रों में तो ऐसे हथकरघे 70-80 प्रतिशत तक थे।
- इसके अलावा भी कई छोटे-छोटे सुधार किये गये जिनसे बुनकरों को अपनी उत्पादकता बढ़ाने और मिलों से मुकाबला करने में मदद मिली।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भारत

लघु - हथकरघा ↑

1900-1940

→ फ्लाई राटल → उत्पादन ↑

श्रम ↓

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

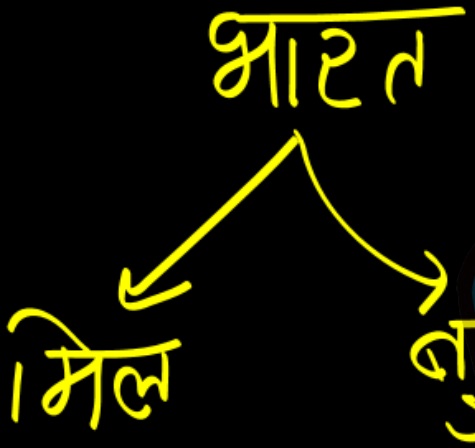

बुनकरों का मिलों से मुकाबला

- कुछ बुनकर मिलों के साथ प्रतिस्पर्धा कर मुकाबला भी कर पा रहे थे।
- बुनकरों में से कुछ मोटा कपड़ा बनाते थे जबकि कुछ महीन किस्म के कपड़े बुनते थे।
- मोटे कपड़ों को मुख्य रूप से गरीब ही खरीदते थे और उसकी मांग में भारी उतार चढ़ाव आते थे।
- खराब फसल और अकाल के समय जब गरीब ग्रामीणों के पास खाने को कुछ नहीं होता था और नकद आय के साधन खत्म हो जाते थे तो वे कपड़ा नहीं खरीद सकते थे।

- बेहतर किस्म के कपड़े की माँग खाते-पीते तबके में ज्यादा थी। उसमें उतार-चढ़ाव कम आते थे।
- जब गरीब भूखों मर रहे होते थे तब भी अमीर यह कपड़ा खरीद सकते थे।
- अकालों से बनारसी या बालूचरी साड़ियों की बिक्री पर असर नहीं पड़ता था।
- हालांकि मिल विशेष प्रकार की बुनाई की नकल नहीं कर सकते थे।
- बुने हुए बॉर्डर वाली साड़ियाँ या मद्रास की प्रसिद्ध लुंगियों की जगह लेना मिलों के लिए आसान नहीं था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



हाथ से बुना कपड़ा



- हाथ से बने कपड़े के महीन डिजाइन की मिलों में नकल नहीं की जा सकती थी।

- ऐसा भी नहीं है कि 20वीं सदी में भी उत्पादन बढ़ाते जा रहे बुनकरों या दस्तकारों को हमेशा फायदा ही हो रहा था।
- उनकी जिंदगी बहुत कठोर थी।
- उन्हें दिन-रात काम करना पड़ता था।
- अकसर पूरा परिवार बच्चे, बूढ़े, औरतें उत्पादन के किसी न किसी काम में हाथ बंटाता था।
- फिर भी ये फैक्ट्रियों के युग में अतीत के अवशेष नहीं बने।
- उनका जीवन और श्रम औद्योगीकरण की प्रक्रिया का अभिन्न अंग थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

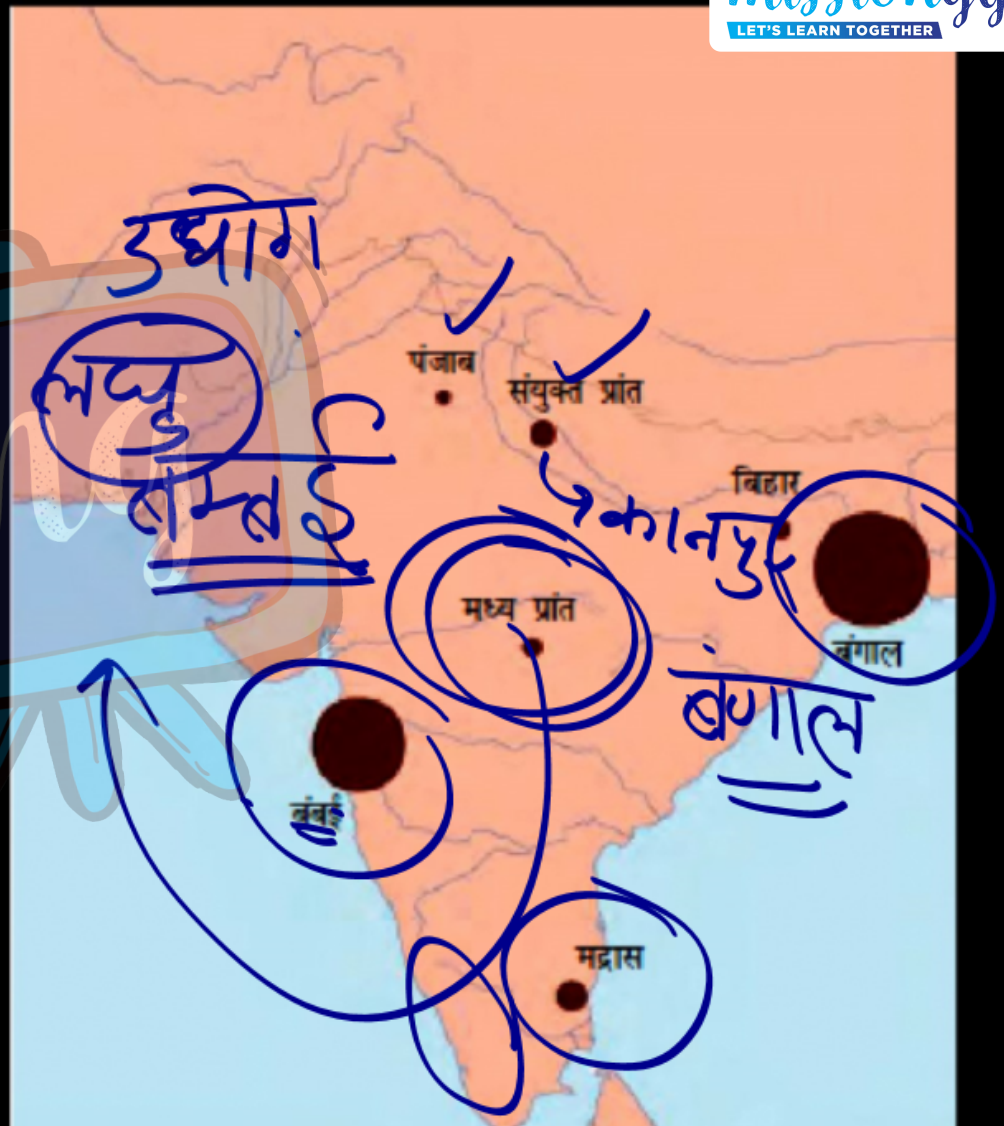

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

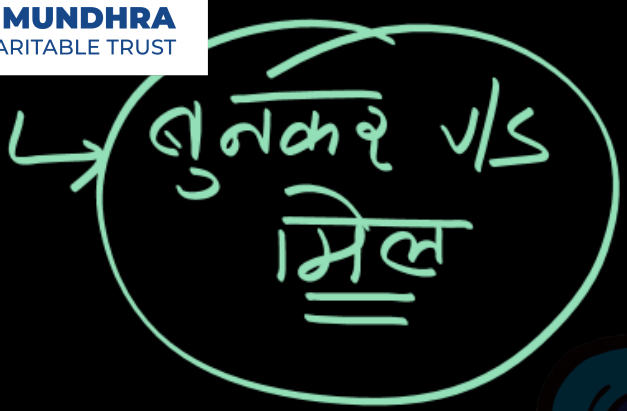





बुनकर → 1900-1940.

→ मशीन (FS)

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

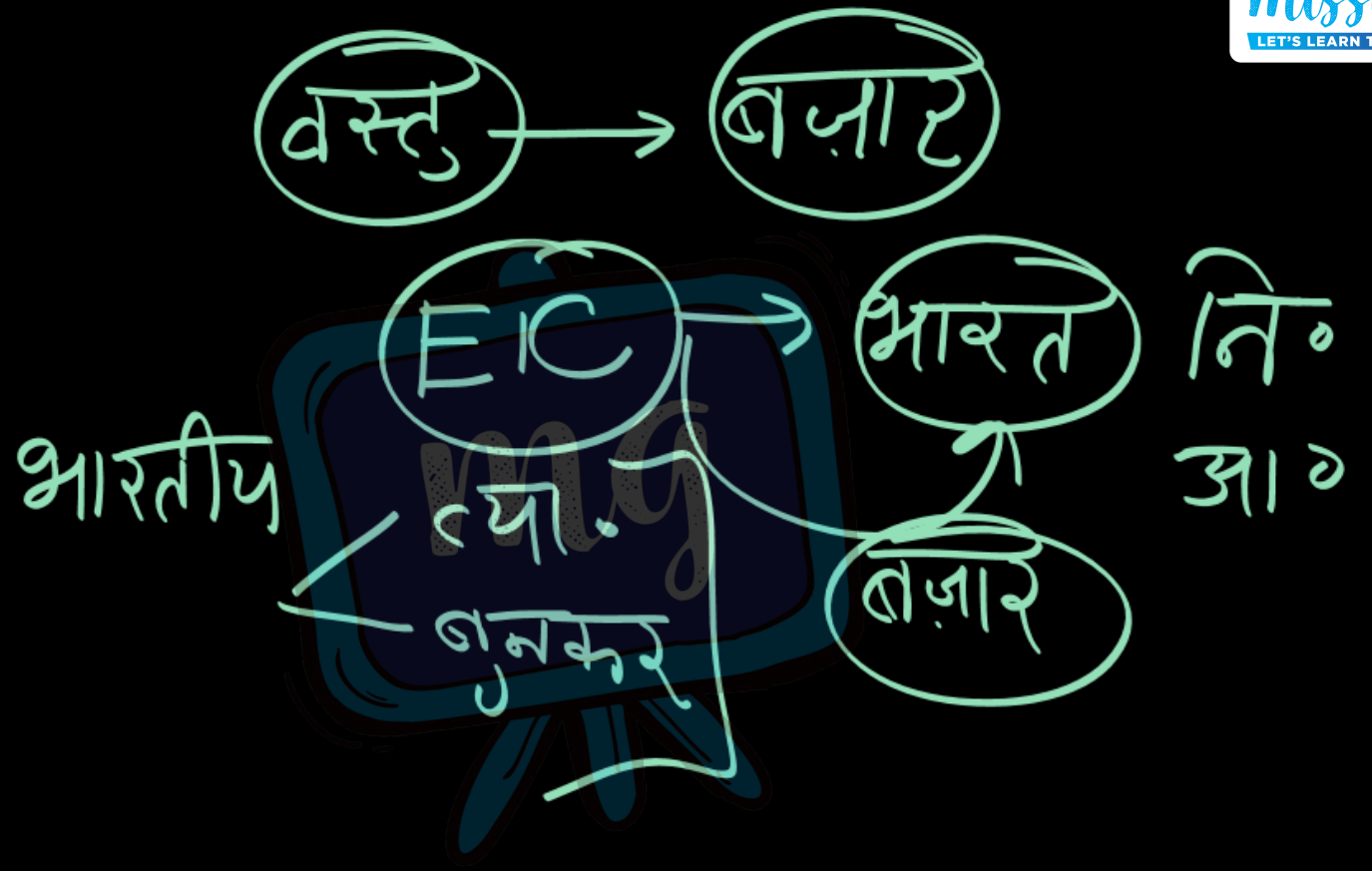

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

वस्तुओं के लिए बाजार

- हम देख चुके हैं कि किस तरह ब्रिटिश निर्माताओं ने भारतीय बाजार पर कब्जे के लिए प्रयास किया।
- हमने यह भी देखा कि भारतीय बुनकरों व दस्तकारों, व्यापारियों और उद्योगपतियों ने औपनिवेशिक नियंत्रण का विरोध किया।
- उन्होंने आयात शुल्क सुरक्षा के लिए माँग उठाई, अपने लिए जगह बनाई और अपने माल के बाजार को फैलाने का प्रयास किया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

